छह महोर्रम

शशुम माहे अज़ा को कर्बला में हशर बरपा था
हुसैन इब्ने अली से मुनहरिफ सारा ज़माना था

ख़्यामे शाहे दीं उठवा रहे थे नहर से आदा
अलमदारे हुसैन इब्ने अली को ग़ैज आता था

यहाँ तो रोकते थे जंग से अब्बास को सरवर
लड़ाई आज ही हो हर शक़ी का वाँ इरादा था

चढ़ा कर जिसको कांधे पर पयम्बर फख़्र करते थे
उसी इब्ने रसूललिल्लाह पर फ़ौज़ों का नरग़ा था

ब मजबूरी हटाए उसने अपने खेेमे दरिया से
के जिसकी मिल्क में ऐ मोमिनो हर एक दरिया था

इधर तो नहर से खेमे हरम के उठते जाते थे
उधर शब्बीर की आँखों से ज़ारी खूँ का दरिया था

यह कैसा इन्क़िलाब आया ज़माने में के दरिया पर
ख़याम आदा के उस जा हैं जहाँ पर शह का खेमा था

हबाब इस ग़म से अब तक सर पटक़ते है लबे साहिल
के शाहे बेहरो बर के वास्ते दरिया पा पहरा था

यह किस्मत थी जो एक शब भी रहे ऐ 'फिक्र' रौज़े पर
हम ऐसे आसियों का कर्बला में कब ठिकाना था